एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 03 (मई-जून, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अदरक की वैज्ञानिक खेती

(*डॉ. सोमेन्द्र नाथ[1] एवं डॉ. रामभरोसे[2])
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान)/ प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती
(आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: snathkvkjnp82@gmail.com

अदरक की खेती मुख्य रूप से उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है। इसके पौधों को कंद के रूप में उगाया जाता है। अदरक का इस्तेमाल विशेषकर खाने में मसाले के तौर पर किया जाता है, इसके अलावा मुख्य रूप से इसे चाय बनाने, अचार बनाने तथा अनेक प्रकार के व्यंजनों में खुशबु लाने के लिए इस्तेमाल में लाते है। अदरक को सुखाकर उसे सोंठ के रूप में भी उपयोग में लाते है, इसके अलावा इसे अनेक प्रकार के रोगो पथरी, खांसी, सर्दी–जुकाम, पीलिया और पेट के कई रोगो के लिए भी लाभकारी माना जाता है। अदरक के बीजो की रोपाई को कंद के रूप में किया जाता है। कंदो की रोपाई से पहले खेत में मेड को तैयार कर लिया जाता है। खेत में मेड़ो को तैयार करते समय प्रत्येक मेड़ के बीच में एक से सवा फीट की दूरी अवश्य रखे, तथा बीजो को 15 सेंटीमीटर की दूरी और 5 **सेमी.** की गहराई में लगाया जाता है। अदरक के पौधों को अधिक धूप की जरूरत होती है, इसलिए इसकी खेती को छायादार जगह में नहीं करना चाहिए। भारत के उत्तरी भाग में अदरक के बीजो की रोपाई के लिए अप्रैल माह को उपयुक्त माना जाता है, वही उत्तर भारत में इसके बीजो की रोपाई मई के महीने में की जाती है। इसके अलावा इसे मई और जून के महीने में भी लगा सकते है।

अदरक की खेती के लिए भूमि – अदरक की खेती के लिए उचित जीवाश्म और कार्बनिक प्रदार्थ युक्त मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही भूमि जल निकासी वाली होनी चाहिए। अदरक की खेती के लिए भूमि का **पी.एच.** मान तकरीबन 6 होना चाहिए। अदरक की फसल के लिए उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण कटिबंध जलवायु की आवश्यकता होती है। गर्मियों का मौसम अदरक की फसल के लिए अधिक उपयुक्त होता है, क्योकि गर्मियों के मौसम में इसके कंद अच्छे से विकास करते है। इसकी फसल को समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर करना चाहिए अदरक के पौधों को अंकुरित होने के लिए 20 से 25 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है, तथा कंदो को पकने के दौरान 30 से 35 डिग्री तापमान जरूरी होता है।

खेत की तैयारी– अदरक की अधिक उपज के लिए हल्की दोमट या बलूई दोमट मिट्टी सबसे सही रहती है। 6.0 से 7.5 पीएच मान वाली भूमि में अदरक की अच्छी पैदावार मिलती है। अदरक के खेती के लिए जल निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए। मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की अच्छे से जुताई कर लें। इसके बाद देसी हल या कल्टीवेटर से एक और जुताई कर लें। इससे मिट्टी भूरभूरी हो जाएगी। आखिरी जुताई करने के 3 से 4 हफ्ते पहले खेत में 250 से 300 क्विंटल सड़ी हुई गोबर की खाद डाल दें। इसके बाद एक या दो बार फिर से खेत की अच्छे से जुताई कर खाद को मिट्टी में मिला दें।

उन्नतशील किस्मे– नदिया, मरान, जोरहट, सुप्रभा, सुरूचि, सुरभि, वारदा, महिमा, अथिरा, अस्वाथी और हिमगिरी ।

अदरक की बुवाई– अदरक की फसल को तैयार होने में 8 से 9 महीने का समय लग जाता है। 1 हेक्टेयर से अदरक की पैदावार 150 से 200 क्विंटल तक हो जाती है। अच्छी उपज के लिए बीजों का सही चुनाव बेहद जरुरी होता है। अदरक के बीजों का चुनाव उस समय ही कर लेना चाहिए जब 6 महीने की फसल हो उस समय 2.5 से 5 सेंटीमीटर लंबे कंदों को जिनका वजन 20 से 25 ग्राम हो और जिनमें तीन गांठें निकल आई हो। इसी बीज का उपयोग अगले साल बीज के रूप में करना चाहिए. जानि, अदरक बुवाई की तीन विधियों के बारे में।

1) क्यारी विधि– इस विधि में 1.20 मीटर चौड़ी और 3 मीटर लंबी क्यारियां बनाई जाती हैं। ये क्यारियां जमीन की सतह से 15–20 सेंटीमीटर ऊंची होनी चाहिए। प्रत्येक क्यारी के चारो ओर 50 सेंटीमीटर चौड़ी नाली बनानी चाहिए। क्यारी में 30–20 सेंटीमीटर दूरी पर 8 से 10 सेंटीमीटर की गहराई में बीज की बुवाई करनी चाहिए।

2) मेड़ विधि– इस विधि में 20 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज की बुवाई करने के बाद मिट्टी चढ़ाकर मेड़ बनाई जाती है। बीज 10 सेंटीमीटर की गहराई में बोया जाता है। इससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। जिन क्षत्रों में जलजमाव की समस्या हो, उन क्षेत्रों में इस विधि से अदरक की खेती की जाती है।

3) समतल विधि– ये विधि हल्की मिट्टी में अपनाई जाती है। इस विधि में 30 सेंटीमीटर पंक्ति से पंक्ति की दूरी होनी चाहिए। पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर होती है। बीज की बुवाई 8 से 10 सेंटीमीटर की गहराई में होनी चाहिए। जिन क्षेत्रों में पर जलजमाव की स्थिति नहीं होती, वहाँ इस विधि से खेती की जाती है।

बुवाई का समय – दक्षिण भारत में अदरक की बुवाई का उचित समय अप्रैल–मई माह है। इस समय बोई गई फसल दिसंबर महीने में तैयार हो जाती है। वहीं मध्य और उत्तर भारत में इसकी बुवाई का सही समय अप्रैल और जून माह है। 15 मई से 15 जून तक इसकी बुवाई कर देना चाहिए। जबकि देश के पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी बुवाई मार्च महीने में करना चाहिए।

बीज की मात्रा – अदरक की 1 एकड़ फसल तैयार करने के लिए 7 से 8 क्विंटल ताजी गाँठो की जरूरत होती है।

बीज उपचार – अदरक का बीज उपचारित करने के लिए 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम को 1 लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर कन्दों को 30 मिनट तक डुबो कर उपचारित करे। उपचार के बाद गांठों को 3–4 घंटें के लिए छांव में सुखाएं।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा– अदरक के खेत में कंदो की रोपाई से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लेना चाहिए। इसके लिए खेत की गहरी जुताई करवा दे। जुताई के बाद खेत को कुछ समय के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दे,जिससे खेत की मिट्टी में अच्छी तरह से धूप लग जाएगी। इसके बाद खेत में पानी लगा कर छोड़ देना चाहिए। पानी लगाने के बाद जब खेत की मिट्टी ऊपर से सूखी दिखाई देने लगे तब उसकी रोटावेटर लगा कर जुताई करवा दे, इससे खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाएगी। मिट्टी के भुरभुरा होने के पश्चात खेत में पाटा लगा कर जुताई कर खेत को समतल कर दे, इससे खेत में अच्छी जल निकासी हो जाएगी। चूंकि अदरक के पौधों की रोपाई को कंदो के रूप में किया जाता है। इसलिए खेत को उचित मात्रा में उवर्रक की आवश्यकता होती है। खेत की मिट्टी को पर्याप्त मात्रा में खाद देने के लिए खेत की मिट्टी की जांच कर लेनी चाहिए,जिससे खेत की मिट्टी के अनुसार उससे उवर्रक की मात्रा दी जा सके। सबसे पहले आपको खेत की जुताई के समय 10 से 15 गाड़ी पुरानी गोबर की खाद को प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देना चाहिए। इसके बाद खेत में जुताई कर इस खाद को मिट्टी में अच्छे से मिला दे। इसके अतिरिक्त खेत की आखरी जुताई के समय एन.पी.के. की मात्रा का

छिड़काव खेत की मिट्टी में करना चाहिए। यदि खेत की मिट्टी में जिंक की मात्रा कम पाई जाती है, तो एक हेक्टेयर के खेत में 25 **किग्रा** जिंक की मात्रा को छिड़क देना चाहिए। इसके बाद बीज रोपाई के लगभग 40 दिन बाद सिंचाई के साथ 20 झळ नाइट्रोजन की मात्रा दी जाती है।

सिचाई – अदरक की फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन इसकी प्रारंभिक सिंचाई को बीज रोपाई के 30 दिनों के अंदर कर देना चाहिए। इसके बाद 15 से 20 दिन के अंतराल में पौधों को पानी देना चाहिए। बारिश के मौसम में केवल जरूरत पड़ने पर सिंचाई करनी चाहिए।

खरपतवार नियत्रण– अदरक के पौधे भूमि की सतह पर रहकर ही पोषक तत्वों को ग्रहण करते है। इसलिए इसके पौधों को खरपतवार पर नियंत्रण की अधिक आवश्यकता होती है। खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए प्राकृतिक विधि निराई गुड़ाई का इस्तेमाल किया जाता है। अदरक के खेत की पहली गुड़ाई को बीजो की रोपाई के एक महीने बाद करना चाहिए। अदरक के बीजो को अधिक गहराई में नहीं लगाया जाता है, इसलिए खरपतवार की गुड़ाई अधिक गहराई से नहीं करनी चाहिए। इसके खेत में 3 से 4 गुड़ाई की आवश्यकता होती है। पहली गुड़ाई के बाद 25 दिन अंतराल में बाकी की गुड़ाई को करना होता है।

अदरक की खुदाई– अदरक के पौधों को तैयार होने के लिए 8 महीने का समय लग जाता है। जब पौधे की पत्तियाँ पीले रंग की दिखाई देने लगे तब अदरक की खुदाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद कंदो को पानी में डालकर अच्छे से धोकर छिलको को निकाल देना चाहिए। इन कंदो को अच्छी तरह से धूप में सूखा लिया जाता है। धूप में ठीक से सुखाने के बाद इन्हे भंडारित कर बाजार में बेचने के लिए भेज देना चाहिए।

उत्पादन– एक हेक्टेयर के खेत में 15 से 20 टन अदरक की फसल प्राप्त हो जाती है। अदरक का बाजारी भाव 10 से 15 रूपए प्रति किलो होता है। जिससे किसान भाई अदरक की एक बार की फसल से दो लाख की कमाई आसानी से कर सकते